रतलाम मंडल का इतिहास

पश्चिम रेलवे का रतलाम मंडल 15 अगस्त 1956 को भारतीय रेलवे की विभागीय योजना के अंतर्गत अस्तित्व में आया। मंडल का उद्घाटन तात्कालीन मध्य भारत राज्य के मुख्यमंत्री श्री तखतमल जैन द्वारा किया गया।

अतीत के झरोखे से –

रतलाम मंडल का रेलवे लिंक से जुड़ने का 130 से अधिक वर्षों का गौरवशाली इतिहास रहा है यहां पर मीटर गेज खंड 1874 में आरंभ हुआ जबकि ब्रॉडगेज 1893 में अस्तित्व में आया। यह एक बड़ा जंक्शन है और भारतीय रेलवे की मीटर और ब्राड गेज लाइनों का रेल मंडल है। रतलाम शहर से चार बड़ी रेलवे लाइनें होकर गुजरती है जो कि मुंबई, दिल्ली अजमेर और खंडवा की ओर जाती है। इनमें डॉ. अंबेडकर नगर-खंडवा मीटर गेज रेल खंड भी शामिल है।

होलकर रेलवे –

महाराजा होलकर ने 1870 में अपनी राजधानी इंदौर शहर को जीआईपी रेलवे से जोड़ने के लिए 100 लाख रु.का ऋण देने का प्रस्ताव किया। तत्काल सर्वे किया गया और जीआईपी लाइन के खंडवा को जंक्शन पाइंट के रूप में चुना गया इसका संरेखण (अलाइनमेंट) सनावद, नर्मदा के खेड़ीघाट और इंदौर के विध्य पर्वत की ढ़लान पर चोरल घाटी के रास्ते होकर जाता था।

महाराजा होलकर के इस योगदान ने मालवा क्षेत्र में रेल लाइनों के निर्माण को गति प्रदान की। विंध्य घाट पर बहुत अधिक तीव्र ढ़लान वाला ग्रेडियंट (1:40) होने से अत्यधिक भारी कार्य किए जाने थे। इसमें अनुमानित 510 यार्ड की 4 सुरंगों की खुदाई, डीप कटिंग और हेवी रिटेनिंग वाल्स के कार्य एक साथ किए जाने थे। नर्मदा नदी को 157 फीट के 14 स्पैन के पुल और लो वाटर लेवल के उपर 80 फीट पियर्स से पार किया जाना था। इस खंड में हाई पियर्स के साथ 14 अन्य बड़े पुल बनने थे जिसमें सबसे बड़ा पियर नदी के तल से 152 फीट उपर बनाया जाना था।

खंडवा-सनावद का प्रथम खंड यातायात के लिए 1.12.1874 को खोला गया। होल्कर राज्य के महाराजा द्वारा 5.10.1876 को नर्मदा ब्रिज यातायात के लिए खोला गया जिसे 'होलकर-नर्मदा ब्रिज' नाम दिया गया।

सिंधिया- नीमच रेलवे –

इंदौर -नीमच के मध्य सर्वे का कार्य 1871-72 में शुरू किया गया जबकि इस परियोजना की योजना एवं प्राक्कलन 1872-73 में भारत सरकार को प्रस्तुत किया गया था। महाराजा सिंधिया ने इस परियोजना के लिए 4% वार्षिक ब्याज दर पर 75 लाख रुपए के ऋण -अनुदान की सहमति दी तथा इस रेलवे का नाम सिंधिया- नीमच रेलवे रखा गया।इसकी एक ब्रांच लाइन इंदौर से उज्जैन भी थी इंदौर- उज्जैन ब्रांच लाइन का शुभारंभ अगस्त 1876 में हुआ तथा इसे 1879 -80 में पूर्ण कर लिया गया।

नीमच –नसीराबाद रेलवे–

नीमच –नसीराबाद रेलवे निर्माण योजना राजपूताना रेलवे तथा नसीराबाद सिंधिया रेलवे को नीमच तक जोड़ने के लिए बनाई गई थी यद्यपि नीमच –नसीराबाद रेलवे का कार्य 1871 –72 में हाथ में लिया गया था तथा निर्माण कार्य 1872 में शुरू किया गया और इसे मार्च 1881 में पूर्ण कर लिया गया।

राजपूताना मालवा रेलवे –

उपर्युक्त तीनों यूनिट होलकर रेलवे, सिंधिया –नीमच रेलवे तथा नीमच–नसीराबाद रेलवे का समामेलन 1881–82 में एकल प्रबंधन के तहत हुआ तथा इसे राजपूताना मालवा रेलवे का नाम दिया गया।

बी.बी.एंड सी.आई. रेलवे –

राजपूताना मालवा रेलवे बहुत कम समय अस्तित्व में रही जबकि 1.1.1885 को इसका प्रबंधन बी.बी.एंड सी.आई. कंपनी ने अपने हाथ में ले लिया। देश की स्वाधीनता तक रतलाम मंडल की पूरी मीटरगेज का प्रबंधन बी.बी.एंड सी.आई. रेलवे द्वारा किया गया।

मंडल की पहली ब्राडगेज लाइन गोधरा से लिमखेड़ा 1893 में पूर्ण कर ली गई तथा इसे लिमखेड़ा – दाहोद–रतलाम लाइन से 1893 में जोड़ा गया तथा इसे यातायात के लिए 1894 में खोला गया जबकि रतलाम – नागदा–उज्जैन ब्राडगेज लाइन को पूर्ण कर इसे 1896 में यातायात के लिए खोल गया। इस लाइन का पूरा प्रबंधन स्वाधीनता (15.08.1947 तक) बी.बी.एंड सी.आई. रेलवे द्वारा किया गया।

निम्नलिखित सेक्शनों मे पूर्ण किया गया दोहरीकरण का कार्य वर्षवार उनके सामने दर्शाया गया है –

गोधरा -पिपलोद सेक्शन	1958-1959
पिपलोद –दाहोद- रतलाम सेक्शन	1959-1960
रतलाम- नागदा सेक्शन	1960–1962
नागदा -उज्जैन सेक्शन (गंभीर ब्रिज को छोड़कर)	1979–1981
उज्जैन -मक्सी सेक्शन	1964–1965
मक्सी- भोपाल सेक्शन	1993–2001
कालापीपल -फंदा सेक्शन	2003–2008
अकोदिया-मोहम्मद खेड़ा- शुजालपुर	2005–2010
पार्वती - बकतल सेक्शन	2012–2013
चित्तौडगढ़–शंभूपुरा सेक्शन	2018–2019

दाहोद- रतलाम सेक्शन पर पंच पिपलिया में वर्ष 1988 मे नई सुरंग का निर्माण किया गया,1992 में माही नदी ब्रिज और अनास नदी ब्रिज का कार्य पूर्ण किया गया और 1996 में यातायात के लिए खोला गया।

पश्चिम रेलवे -

वर्तमान पश्चिम रेलवे का मुंबई मुख्यालय बी.बी.एंड सी.आई. रेलवे एवं अन्य स्टेट रेलवे के साथ विलय होने के बाद 5 नवंबर 1951 को अस्तित्व में आया।

वर्तमान स्थिति-

वर्तमान में ब्राड गेज को गोधरा से भोपाल, उज्जैन से डॉ.अंबेडकर नगर तथा डॉ.अंबेडकर नगर से फतेहाबाद-रतलाम-चंदेरिया,मक्सी-देवास और खंडवा केबिन से निवारखेड़ी तक विस्तारित किया गया है । मंडल के मीटरगेज को डॉ.अंबेडकर नगर से निमारखेड़ी तक विस्तारित किया गया।

मंडल पर ब्राडगेज के लिमखेड़ा एवं रेंटिया सेक्शन के मध्य 1:50 ग्रेडियंट का लंबा एवं फिसलन भरा ढ़लान है । मीटर गेज पर डॉ.अंबेडकर नगर -खंडवा सेक्शन के कालाकुंड-पातालपानी स्टेशनों के मध्य 1:40 ग्रेडियंट का 8.8 डिग्री रिवर्स कर्व के साथ लंबा एवं फिसलन भरा ढ़लान है ।

रतलाम मंडल मालवा की जनता की सेवा के लिए कार्यकुशल, सस्ती ओर सुलभ परिवहन सेवा उपलब्ध करा रहा है । मंडल भौगोलिक दृष्टि से ही नहीं अपितु औद्योगिक,सामाजिक,आर्थिक और ऐतिहासिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है ।

मध्य प्रदेश के रतलाम मंडल में इंदौर वाणिज्यिक शहरों में एक महत्वपूर्ण रखता है ।देवास तथा नागदा मंडल के औद्योगिक दृष्टि से विकसित कस्बे है जबकि इंदौर के निकट पीथमपुर नव-विकसित औद्योगिक क्षेत्र है ।

मंडल के अंतर्गत आदिवासी जिले झाबुआ एवं धार, ऐतिहासिक एवं पवित्र शहर उज्जैन तथा ओंकारेश्वर,तथा राजस्थान के मेवाड़ क्षेत्र का विश्वप्रसिद्ध ऐतिहासिक शहर एवं महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल चित्तौड़गढ़ शामिल हैं।

मंडल पर प्रतिदिन 143 ब्राडगेज मेल-एक्सप्रेस गाड़ियों तथा 38 (34+4) ब्राडगेज /मीटरगेज यात्री गाड़ियों के माध्यम से 1.44 लाख यात्री यात्रा करते हैं ।

रतलाम मंडल का क्षेत्र के सामाजिक एवं आर्थिक विकास में विभिन्न वस्तुओं जैसे सीमेंट,क्लिंकर,मैगनीज अयस्क,सोडियम सल्फेट,कास्टिक सोड़ा,गेंहू इत्यादि का विभिन्न लोडिंग स्थलों से परिवहन करने में महत्वपूर्ण योगदान है ।